

अब ईश्वर की कृपा से हमें इन सभी बरकतों का लाभ मिलेगा

मुहम्मद इल्यास अहमद क़दरी २-जवाही



मूल्य: ₹.75

तर्जुमा मुद्रा

करामाते उस्माने ग़नी

عقبات

KARAMATE USMANE GHANI (HINDI)

- पुर असरार मा 'जूर
- उमूरे ख़ैर के लिये चन्दा करना सुन्नत है
- उस्माने ग़नी عليه السلام पर करम
- करामत की ता 'रीफ़
- शहादत के बा 'द ग़ैबी आवाज़
- गुस्ताख़ को दरिन्दे ने फाड़ डाला
- मुसा फ़हा की सुन्नतें और आदाब

जन्नतुल बकीअ

مکتبۃ الدین

मक़त-त-तुल नदीना

सिलेस्ट्रेड ह्यूस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दस्वाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph: 9327168200 E-mail: maktabehind@gmail.com, www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज: शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी,
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि
रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई
दुआ पढ़ लीजिये ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे
और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(अल मुस्ततर्फ़, जिल्द:1, स.40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना



व बकीअ

व मग़िफ़रत

13 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوَةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

करामाते उस्माने ग़नी¹ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़्हात) मुकम्मल
पढ़ लीजिये اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ غُرُوْحَلْ आप का दिल अ-ज़मते सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان
से लबरेज़ हो जाएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्काए मुकर्रमा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ऐ लोगो !
बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द
नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के
अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।

(फ़िरदौसुल अख़बार, जि.5, स.375, हदीस:8210)

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1. येह बयान अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) कराची में होने वाले (20 जुल हिज्जतुल हुराम सि.1429 हि. 2008 के) सुन्नतों भरे इजतिमाअ में फ़रमाया जो ज़रूरतन तरमीम के साथ तब्ज़ किया गया है ।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझे पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है ।

पुर अस्सार मा'ज़ूर

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं ने मुल्के शाम की सर ज़मीन में एक आदमी देखा जो बार बार येह सदा लगा रहा था : “हाए अफ़सोस ! मेरे लिये जहन्नम है ।” मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देख कर हैरान रह गया कि उस के दोनों² हाथ पाउं कटे हुए हैं, दोनों² आंखों से अन्धा है और मुंह के बल ज़मीन पर औंधा पड़ा हुवा बार बार येही कहे जा रहा है कि “हाए अफ़सोस ! मेरे लिये जहन्नम है ।” मैं ने उस से पूछा कि ऐ आदमी ! क्यूं और किस बिना पर तू येह कह रहा है ? येह सुन कर उस ने कहा : ऐ शख़्स ! मेरा हाल न पूछ, मैं उन बद नसीबों में से हूं जो अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद करने के लिये आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मकान में दाख़िल हो गए थे, मैं जब तल्वार ले कर क़रीब पहुंचा तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की जौजए मोहतरमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मुझे ज़ोर ज़ोर से डांटने लगीं तो मैं ने गुस्से में आ कर बीबी साहिबा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को थप्पड़ मार दिया ! येह देख कर अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने तड़प कर येह दुआ मांगी : “अल्लाह तआला तेरे दोनों² हाथ और दोनों² पाउं कटे, तुझे अन्धा करे और तुझे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतेँ भेजता है ।

को जहन्नम में झोंक दे ।” ऐ शख़्स ! अमीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की इस काहिराना दुआ को सुन कर मेरे बदन का एक एक रूंगटा खड़ा हो गया और मैं खौफ़ से कांपता हुवा वहां से भाग खड़ा हुवा । मैं अमीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की चार⁴ दुआओं में से तीन³ की ज़द में आ चुका हूँ, तुम देख ही रहे हो कि मेरे दोनों² हाथ और दोनों² पाउं कट चुके और आंखें भी अन्धी हो चुकीं, आह ! अब सिर्फ़ चौथी⁴ दुआ या'नी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाकी रह गया है । (अर्रियाजुन्नज़रह फ़ी

मनाकिबिल अशरह, अल जुज़:3, स.41, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

हज़रते उस्मान का दुश्मन ज़लीलो ख़्वार है

आख़िरत में भी अज़ाबे नार का हक़दार है

कुन्यत व अल्काब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! 18 जुल हिज्जतुल ह़राम 35

सिने हिजरी को अल्लाहु ग़नी के प्यारे नबी, मक्की म-दनी

عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़लीलुल क़द्र सहाबी उस्माने ग़नी

رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ निहायत मज़्लूमियत के साथ शहीद किये गए । आप

رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ खुलफ़ाए राशिदीन (या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुड़द पड़ो कि तुम्हारा दुड़द मुझ तक पहुँचता है।

सिद्दीक़, हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़, हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी, हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा اٰخِمْهُمْ عَلَيْهِمُ ۙ में तीसरे ख़लीफ़ा हैं। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की कुन्यत “अबू अम्र” और लक़ब “जुन्नूरैन” (दो नूर वाले) हैं, क्योंकि अल्लाहु ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ के नूर, आका हुज़ूर, शाफ़ेए यौमुनुशूर, शाहे ग़यूर ﷺ ने अपनी दो² शहज़ादियां यके बा’द दीगरे हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के निकाह में दी थीं।

**नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुम को जुन्नूरैन जोड़ा नूर का**

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने आगाज़े इस्लाम ही में क़बूले इस्लाम कर लिया था, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को “साहिबुल हिज़रतैन” (या’नी दो² हिज़रतों वाले) कहा जाता है क्योंकि आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने पहले हबशा और फिर मदीनतुल मुनव्वरा رَاٰهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا की तरफ़ हिज़रत फ़रमाई।

दो बार जन्नत ख़रीदी

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शाने वाला बहुत बुलन्दो बाला है, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी ।

ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी में नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, ताजदारे नुबुव्वत, शहन्शाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मर्तबा जन्नत ख़रीदी, एक मर्तबा “बीरे रूमह” यहूदी से ख़रीद कर मुसल्मानों के पानी पीने के लिये वक्फ़ कर के और दूसरी बार “जैशे उस्त” के मौक़अ पर । चुनान्वे सुनने तिरमिज़ी में है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : कि मैं बारगाहे नबवी عَلَی صَاحِبِہَا السَّلَام में हाज़िर था और हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोहतरम, रहमते अलम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मोहतशम, सरापा जूदो करम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को “जैशे उस्त” (या’नी ग़ज़वए तबूक) की तैयारी के लिये तरगीब इर्शाद फ़रमा रहे थे । हज़रते सय्यिदुना इस्मान बिन अफ़फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उठ कर अर्ज की : या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पालान और दीगर मुतअल्लिका सामान समेत सौ¹⁰⁰ ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं । हुजूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फिर तरगीबन फ़रमाया । तो हज़रते सय्यिदुना इस्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ दोबारा खड़े हुए और अर्ज की : या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं तमाम सामान समेत दो सौ²⁰⁰ ऊंट हाज़िर करने की ज़िम्मादारी लेता

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुर्रदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है ।

हूँ । दो² जहां के सुल्तान, सरवरे जीशान, महबूबे रहमान
 عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ किराम से फिर
 तरगीबन इर्शाद फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
 ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ मैं मअ
 सामान तीन सौ³⁰⁰ ऊंट अपने ज़िम्मे क़बूल करता हूँ ।

रावी फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हुजुरे अन्वर, मदीने के ताजवर,
 शाफ़ेए महशर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर, ग़ैबों से बा ख़बर, महबूबे दावर
 ﷺ ने येह सुन कर मिम्बरे मुनव्वर से नीचे
 तशरीफ़ ला कर दो² मरतबा फ़रमाया : “आज से उस्मान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ)
 जो कुछ करे उस पर मुवाख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं ।”

(सुनुत्तिरमिज़ी, जि.5, स.391, हदीस:3720, दारुल फ़िक्क बैरूत)

इमामुल अस्ख़िया ! कर दो अ़ता जज़्बा सख़ावत का !

निकल जाए हमारे दिल से हुब्बे दौलते फ़ानी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

950 ऊंट और 50 घौड़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आजकल देखा गया है बा'ज
 हज़रात दूसरों की देखादेखी जज़्बात में आ कर चन्दा लिखवा देते हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड़ जाता है हत्ता कि बा'ज तो देते भी नहीं ! मगर कुरबान जाइये महबूबे मुस्तफ़ा, सय्यिदुल अस्ख़िया, इस्माने बा हया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وَرَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जूदो सखा पर कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने अपने ए'लान से बहुत ज़ियादा चन्दा पेश किया चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْہِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह तो उन का ए'लान था मगर हाज़िर करने के वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने 950 ऊंट, 50 घोड़े और 1000 अशरफ़ियां पेश कीं । फिर बा'द में 10 हज़ार अशरफ़ियां और पेश कीं । (मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने पहली बार में एक 100 का ए'लान किया, दूसरी बार 100 ऊंट के इलावा और 200 का, तीसरी बार और 300 का कुल 600 ऊंट (पेश करने) का ए'लान फ़रमाया ।

(मिर्आतुल मनाज़ीह, जि.8, स.395)

मुझे गर मिल गया बहूरे सखा का एक भी क़तरा
मेरे आगे ज़माने भर की होगी हेच सुल्तानी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुर्रदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुर्रदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

उमूरे ख़ैर के लिये चन्दा करना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'जु नादान दीनी कामों के लिये चन्दा करने को बुरा जानते और इस से रोकते हैं, याद रखिये ! बिला वज्हे शर-ई इस कारे ख़ैर से रोकने की शरअन मुमानअत है चुनान्वे फ़तावा र-जविय्या जिल्द 23 सफ़्हा 127 पर मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान एक सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : “उमूरे ख़ैर के लिये मुसल्मानों से इस तरह चन्दा करना बिद्अत नहीं बल्कि सुन्नत से साबित है जो लोग इस से रोकते हैं (वोह) **مَنْ أَمْسَأَ الْخَيْرَ مُتَبَاثِمًا**”

(तर्जमए कन्जुल ईमान : भलाई से बड़ा रोकने वाला हृद से बढ़ने वाला गुनहगार (पा.29, अल क़लम:12) में दाख़िल होते हैं। हज़रते सय्यिदुना जरीर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से है, कुछ (हज़रात) बरहना पा, बरहना बदन, सिर्फ़ एक कमली कफ़नी की तरह चीर कर गले में डाले ख़िदमते अक्दसे हुजूर पुरनूर, सय्यिदे आ़लम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में हाज़िर हुए, हुजूर पुरनूर रहमते आ़लम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उन की मोहताजी (या'नी गुर्बत) देखी, चेहरए अन्वर का रंग बदल गया। बिलाल (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) को अज़ान का हुक्म दिया, बा'दे नमाज़ खुत्बा फ़रमाया, बा'दे तिलावते आयाते मुबारका

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो मुझ पर एक मरतबा दुर्र शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

इर्शाद किया : “कोई शख्स अपनी अशरफ़ी से स-दका करे, कोई रूपै से, कोई कपड़े से, कोई अपने क़लील (थोड़े) गेहूं से, कोई अपने थोड़े छूहारों से, यहां तक फ़रमाया : अगर्चे आधा छूहारा।” इस इर्शादि गिरामी (या’नी चन्दा देने की तरगीब) को सुन कर एक अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रूपियों का थैला उठा लाए जिस के उठाने में उन के हाथ थक गए, फिर लोग पै दर पै स-दकात लाने लगे, यहां तक कि दो^२ अम्बार (2 ढेर) खाने और कपड़े के हो गए यहां तक कि मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का चहरए अन्वर खुशी के बाइस कुन्दन (या’नी ख़ालिस सोने) की तरह दमकने लगा और इर्शाद फ़रमाया : “जो शख्स इस्लाम में कोई अच्छी राह निकाले उस के लिये उस का सवाब है और उस के बा’द जितने लोग उस राह पर अमल करेंगे सब का सवाब उस (अच्छी राह निकालने वाले) के लिये है बग़ैर इस के कि उन (अमल करने वालों) के सवाबों में कुछ कमी हो।” (सहीह मुस्लिम, स.508, हदीस:1017, दारे इब्ने हज़म बैरूत) चन्दे के बारे में मज़ीद मा’लूमात हासिल करने के लिये मक-त-बतुल मदीना की 107 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “चन्दे के बारे में सुवाल जवाब” का मुतालआ कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

उस्माने ग़नी पर करम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक्के मदीने के सुल्तान, रहमते आलमियान, महबूबे रहमान ﷺ जामेउल कुरआन, हज़रते सय्यिदुना उस्मान इब्ने अफ़फ़ान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर किस क़-दर मेहरबान थे, इस ज़िम्न में एक वाक़ेआ मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जिन दिनों बाग़ियों ने हज़रते सय्यिदुना उस्मान रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के मकाने रफ़ीउशान का मुहासरा किया हुवा था, उन के घर में पानी की एक बूंद तक नहीं जाने दी जा रही थी और हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ प्यास की शिद्दत से तड़पते रहते थे। मैं मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुवा तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ उस दिन रोज़ादार थे। मुझ को देख कर फ़रमाया : ऐ अब्दुल्लाह बिन सलाम (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ! मैं ने आज रात ताजदारे दो जहान, रहमते आलमियान, मदीने के सुल्तान ﷺ को इस रौशनदान में देखा। सुल्ताने ज़माना, रसूले यगाना ﷺ ने इन्तिहाई मुशिफ़क़ाना लहजे में इर्शाद फ़रमाया : “ऐ उस्मान (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ! इन लोगों ने पानी बन्द कर के तुम्हें प्यास से बे क़रार कर दिया है ?” मैं ने अर्ज़ की :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुसल्लीन عَلَیْهِمُ السَّلَام पर दुर्दुदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

जी हां। तो फ़ौरन ही आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक डोल मेरी तरफ़ लटका दिया जो पानी से भरा हुवा था, मैं उस से सैराब हुवा और अब इस वक़्त भी उस पानी की ठंडक अपनी दोनों² छातियों और दोनों² कन्धों के दरमियान महसूस कर रहा हूँ। फिर हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शाफ़ेए उमम, सरापा जूदो करम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) !
अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो इन लोगों के मुक़ाबले में मैं तुम्हारी इम्दाद करूँ और अगर तुम चाहो तो हमारे पास आ कर रोज़ा इफ़तार करो।”
मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे पुर अन्वार में हाज़िर हो कर रोज़ा इफ़तार करना मुझे ज़ियादा अज़ीज़ है। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि मैं इस के बा’द रुख़्सत हो कर चला आया और उसी रोज़ बाग़ियों ने आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को शहीद कर दिया।

(किताबुल मनामात मअ मौसूअतिल इमाम इब्ने अबिहुनिय्या, जि.3, स.74, रक़म:109,

अल मक-त-बतुल असरिय्या, बैरूत)

हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़ल करते हैं कि हज़रते अल्लामा इब्ने बातीश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی (मुतवफ़ा 655 हि.)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

इस से येही समझते हैं कि (सरकार ﷺ के दीदार वाला) येह वाक़ेआ ख़्वाब में नहीं बल्कि बेदारी की हालत में पेश आया।

(जामेए करामाते औलिया, जि.1, स.151, मर्कजे अहले सुन्नत बरकाते रज़ा हिन्द)

कई दिन तक रहे महसूर उन पर बन्द था पानी

शहादत हज़रते उस्मान की बेशक है लासानी

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

खूनरेज़ी ना मन्ज़ूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बे मिसाल सब्रो तहम्मूल कि जामे शहादत तो नोश फ़रमाया मगर मदीनतुल मुनव्वरा شَرَفًا وَتَعْظِيمًا मुनव्वरा में मुसल्मानों के खून का बेहना पसन्द न फ़रमाया। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मकाने आलीशान का मुहासरा हुवा और पानी बन्द कर दिया गया। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के जां निसार दौलत ख़ाने पर हाज़िर हुए और बलवाइयों से मुकाबले की इजाज़त चाही तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इजाज़त देने से इन्कार फ़रमा दिया। और जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के गुलाम हथियारों से लेस हो कर इजाज़त के लिये हाज़िर हुए तो फ़रमाया : “अगर तुम लोग मेरी खुश्नूदी चाहते हो तो हथियार खोल दो और सुनो ! तुम में से जो भी गुलाम हथियार खोल देगा मैं ने उस को आज़ाद किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझे पर रोजे जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

क़सम ! खूनरेज़ी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़ियादा महबूब है ब मुक़ाबले इस के कि मैं खूनरेज़ी के बा'द क़त्ल किया जाऊं या'नी मेरी शहादत लिख दी गई है और नबिय्ये ग़ैबदान, रसूले जीशान, महबूबे रहमान ﷺ ने मुझे इस की बिशारत दे दी है। हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने गुलामों से फ़रमाया :
 “अगर तुम ने जंग की फिर भी मेरी शहादत नहीं टलेगी।”

(तोहफ़ए इस्ना अशरिय्या, मुतर्जम, स.626, बाबुल मदीना कराची)

जो दिल को ज़िया दे जो मुक़द्दर को जिला दे
 वोह जल्वए दीदार है उस्माने ग़नी का
 ह-सनैने करीमैन ने पेहरा दिया

मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, शेरे खुदा, अलिय्युल मुर्तज़ा ﷺ हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से बेहद महबूबत करते थे। हालात की नाजुकी देख कर आप ने अपने दोनों शहज़ादों ह-सनैने करीमैन या'नी इमामे हसन व हुसैन रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया : “तुम दोनों अपनी अपनी तल्वारें ले कर हज़रते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दरवाजे पर जाओ और पेहरा दो। क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ जब ग़ालिब आई और हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शहादत हुई तो मौलाए काएनात, मौला

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

मुश्किल कुशा, शेरे खुदा, अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को सख्त सदमा हुवा और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَإِنَّا لِلَّهِ رَجُوعُونَ (तर्जमए कन्जुल ईमान : हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना । (पा.2, अल ब-क़रह:156)) पढ़ा ।

सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आपस में मेहरबान थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा शहादते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, शेरे खुदा, अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को बेहद सदमा हुवा था, ला रैब (या'नी बेशक) सब सहाबाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आपस में रहीमो करीम थे, इन सब की आपस में महब्वत व मवद्दत (या'नी उल्फ़त) थी, चुनान्वे पारह 26, सूरतुल फ़त्ह आयत 29 में इर्शाद होता है :

तर्जमए कन्जुल ईमान : मुहम्मद مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا वाले काफ़िरों पर सख्त हैं और आपस में سَجْدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنْ नर्म दिल, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते اللَّهِ وَرِضْوَانًا سَيَبَاهِمُنِي सज्दे में गिरते, अल्लाह का फ़ज़ल व रिज़ा चाहते, उन की अलामत उन के وَجُوهِهِمْ مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ चेहरों में है सज्दों के निशान से ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है ।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه رحمة الله الهادي अपनी तफ़सीर “ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इस आयते मुबारका के हिस्से **رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ** या’नी “और आपस में नर्म दिल” के तहत लिखते हैं : “एक दूसरे पर **महब्बत** व मेहरबानी करने वाले, ऐसी कि जैसे बाप बेटे में हो और येह **महब्बत** इस हद तक पहुंच गई कि जब एक मो’मिन दूसरे को देखे तो फ़र्ते महब्बत से मुसाफ़हा व मुआनका करे ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स.926)

عَزَّوَجَلَّ **ख़ुदा भी और नबी भी ख़ुद अली भी उस से हैं नाराज़**
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अदू उन का उठाएगा क़ियामत में परेशानी**
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

गुस्ताख़ बन्दर बन गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बुग़जो अ़दावत रखना दारैन (या’नी दुन्या व आख़िरत) में नुक़सान व ख़ुस्सान का सबब है चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान ज़ामी فُذِّسَ سِرُّهُ السَّامِي अपनी मशहूर किताब **शवाहिदुन्नुबुव्वत** में नक़ल करते हैं **3 अफ़राद** यमन के सफ़र पर निकले उन में एक कूफ़ी (या’नी कूफ़े का रहने वाला) था जो शैख़ैने करीमैन (हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमते भेजता है ।

और हज़रते उमर رضي الله تعالى عنهما का गुस्ताख़ था, उसे समझाया गया लेकिन वोह बाज़ न आया । जब येह तीनों³ यमन के क़रीब पहुंचे तो एक जगह क़ियाम किया और सो गए । जब कूच का वक़्त आया तो उन में से उठ कर दो² ने वुजू किया और फिर उस गुस्ताख़ कूफ़ी को जगाया । वोह उठ कर केहने लगा : अफ़सोस ! मैं तुम से इस मन्ज़िल में पीछे रह गया हूं तुम ने मुझे ऐन उस वक़्त जगाया जब शहन्शाहे अज़म व अरब, महबूबे रब عزّوجلّ وصلى الله تعالى عليه وآله وسلّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हो कर इर्शाद कर रहे थे : “ऐ फ़ासिक़ ! अल्लाह عزّوجلّ फ़ासिक़ को ज़लीलो ख़्बार करता है, इसी सफ़र में तेरी शक़ल बदल जाएगी ।” जब वोह गुस्ताख़ उठ कर वुजू केलिये बैठा तो उस के पाउं की उंगलियां मसख़ होना (बिगड़ना) शुरू हो गई, फिर उस के दोनों² पाउं बन्दर के पाउं के मुशाबह हो गए, फिर घुटनों तक बन्दर की तरह हो गया, यहां तक कि उस का सारा बदन बन्दर की तरह बन गया । उस के रुफ़का ने उस बन्दरनुमा गुस्ताख़ को पकड़ कर ऊंट के पालान के साथ बांध दिया और अपनी मन्ज़िल की तरफ़ चल दिये । गुरूबे आफ़ताब के वक़्त वोह एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कुछ बन्दर जम्अ थे, जब उस ने उन को देखा तो मुज़़्तरिब (या'नी बेताब) हो कर रस्सी छुड़ाई और उन में जा मिला । फिर सभी बन्दर इन दोनों² के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

क़रीब आए तो येह खाइफ़ (या'नी खौफ़ज़दा) हो गए मगर उन्होंने ने उन को कोई अज़िय्यत न दी और बन्दर नुमा गुस्ताख़ इन दोनों² के पास बैठ गया और इन्हें देख देख कर आंसू बहाता रहा। एक घन्टे के बा'द जब बन्दर वापस गए तो वोह भी उन के साथ ही चला गया।

(शवाहिदुनुबुव्वत, स.203)

**हम उन की याद में धूमें मचाएंगे कियामत तक
पड़े हो जाएं जल के खाक सब आ'दाए उस्मानी**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा ! शैख़ैन करीमैन का गुस्ताख़ बन्दर बन गया। किसी किसी को इस तरह दुन्या में भी सज़ा दे कर लोगों के लिये इब्रत का नुमूना बना दिया जाता है ताकि लोग डरें, गुनाहों और गुस्ताखियों से बाज़ आएँ। अल्लाह तआला हम को सहाबए किराम और अहले बैत इज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बत करने वालों में रखे।

हम को अस्हाबे नबी से प्यार है اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

हम को अहले बैत से भी प्यार है اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

ईमान पर ख़ातिमा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक फ़ितने का ज़िक्र किया और हज़रते उस्मान के लिये फ़रमाया कि येह उस में जुल्मन शहीद कर दिये जाएंगे। (त्रिमिज़ी ج ५ ص ३९० حديث ३७२८)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : इस इर्शाद में चन्द ग़ैबी ख़बरें हैं हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) के इन्तिक़ाल की तारीख़, आप की वफ़ात की जगह, आप की वफ़ात की नोइय्यत कि शहीद हो कर होगी आप का ईमान पर ख़ातिमा क्यूं कि शहादत के लिये इस्लाम पर मौत ज़रूरी है, येह है हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) का इल्मे ग़ैब। (मुलख़ब़स अज़ मिरआत, जि. 8, स. 403)

जिस आईने में नूरे इलाही नज़र आए

वोह आईना रुख़सार है उस्माने ग़नी का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बद निगाही का मा 'लूम हो गया

हज़रते अब्दुल्लाह ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوَى अपनी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरूदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हातर है ।

किताब “तबक्कात” में लिखते हैं कि एक शख़्स ने सरे राह किसी औरत को ग़लत निगाहों से देखा फिर जब वोह अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ख़िदमते बा अ-ज़मत में हाज़िर हुवा तो हज़रते अमीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फ़रमाया : तुम लोग ऐसी हालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के असरात होते हैं ! उस शख़्स ने जलभुन कर कहा कि क्या रसूलुल्लाह ﷺ के बा'द अब आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर वहूय उतरने लगी है ? आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को येह कैसे मा'लूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के असरात हैं ?

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : “मुझ पर वहूय तो नाज़िल नहीं होती लेकिन मैं ने जो कुछ कहा बिल्कुल सच्ची बात है । الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ । रब्बे इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी फ़िरासत (नूरानी बसीरत) अता फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के हालात व ख़यालात जान लेता हूं ।”

(हुज्जतुल्लाहि अलल आलमीन, स.613, मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा, हिन्द

अरियाजुन्नज़रह अल जुज़ :3, स.40)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिस्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

आंखों में पिघला हुवा सीसा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अहले बसीरत और साहिबे बातिन थे लिहाज़ा आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी निगाहे करामत से उस शख्स की आंखों से की जाने वाली मा'सिय्यत मुला-हज़ा फ़रमा ली और उस की आंखों को जिनाकार करार दिया। बेशक अजनबिय्या या'नी ना महरमा कि जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो उस की तरफ़ बिला इजाज़ते शर-ई नज़र करना बहुत बड़ी ज़ुर'अत है। मन्कूल है : “जो शख्स शहवत से किसी अजनबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।”

(अल हिदाया अल जुज़'रबिअ, स.368, दार एह्याउत्तुरासिल अरबी, बैरूत)

मुख़्तलिफ़ आ'ज़ा का ज़िना

मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे रब्बे ग़फ़ार عزّوجلّ و صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “आंखों का ज़िना देखना, कानों का ज़िना सुनना, ज़बान का ज़िना बोलना, हाथों का ज़िना पकड़ना और पाउं का ज़िना जाना है।” (सहीह मुस्लिम, स.1428, हदीस:21,2657) मुहक्किफ़ अलल इत्लाफ़, ख़ातिमुल मुहद्दिसीन, हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुर्रदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुर्रदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है।

इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं आंखों का ज़िना बद निगाही, कानों का ज़िना हराम व फ़ोहश बातों का सुनना, ज़बान का ज़िना हराम व बे हयाई की गुफ़्तुगू (हाथों का ज़िना म-सलन किसी अजनबी औरत को छूना) और पाउं का ज़िना बुरे काम की तरफ़ जाना है।

(अशिशूअतुल्लम्भात, जि.1, स.100,101)

आंखों में आग भर दी जाएगी

बद निगाही से बचना बेहद ज़रूरी है वरना खुदा की क़सम !

अज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। मन्कूल है : “जो कोई अपनी आंखों को नज़रे हराम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी।”

(मुकाशफ़तुल कुलूब, स.10)

आग की सलाई

फ़िल्में डिरामे देखने वालों, ना महरमों और अम्रदों के साथ बद निगाही करने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिया है, सुनो ! सुनो ! हज़रते सय्यिदुना अल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ नक्ल करते हैं : औरत के महासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की हिफ़ाज़त न की उस की आंख में ब रोज़े क़ियामत आग की सलाई फेरी जाएगी।

(बह्रुहुमूअ, स.171)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दूरद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अज़ लिखता है और कीरात उहुद पहाड़ जितना है।

नज़र दिल में शहवत का बीज बोती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आंखों की हिफ़ाज़त की हर दम तरकीब रखिये, इन को आज़ाद मत छोड़िये वरना येह हलाकत के गहरे ग़ार में झोंक देंगी चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “अपनी नज़र की हिफ़ाज़त करो क्यूंकि येह दिल में शहवत का बीज बोती है और फ़िल्ने के लिये येही काफ़ी है।” (तल्ख़ीस अज़ एह्याउल उलूम, जि.3, स.126) नबी इब्ने नबी हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन ज़करिया ﷺ से पूछा गया जिना की इब्तिदा क्या है फ़रमाया : “देखना और ख़्वाहिश करना।”

(ऐज़न)

पारह 18 सूरतुनूर आयत नम्बर 30 में अल्लाहु रब्बुल इबाद का इर्शादे आफ़िय्यत बुन्याद है :

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوْا مِنْ

أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوجَهُمْ

ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ

خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝

तर्जमए कन्जुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्म गाहों की हिफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है, बेशक अल्लाह को उन के कामों की ख़बर है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

करामत की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ साहिबे करामत थे, जभी तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस शख्स को बद निगाही पर तम्बीह फ़रमाई । करामत क्या है ? इस बारे में बल्कि इरहास, मऊनत, इस्तिदराज और इहानत की भी ता'रीफ़ात समझ लीजिये चुनान्वे मक-त-बतुल मदीना की मल्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा पहला जिल्द अव्वल सफ़्हा 58 पर लिखा है : “नबी से जो बात ख़िलाफ़े आदत क़ब्ले नुबुव्वत ज़ाहिर हो, उस को इरहास केहते हैं और वली से जो ऐसी बात सादिर हो, उस को करामत केहते हैं और आम मुअमिनीन से जो सादिर हो, उसे मऊनत केहते हैं और बेबाक फुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो, उस को इस्तिदराज केहते हैं और उन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो तो इहानत है ।

ज़लूए सान का क्यूं कर बयान हो ऐ मेरे प्यारे

हया करती है तेरी तो शहा मख़्लूक़े नूरानी

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

अपने मदफ़न की ख़बर दे दी !

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عليه رَحْمَةُ اللّٰهِ फ़रमाते हैं कि

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है ।

मरतबा मदीनतुल मुनव्वरा رَاحَها اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ के उस हिस्से में तशरीफ़ ले गए । जो “हश्शे कौकब” केहलाता था, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने वहां खड़े हो कर एक जगह पर येह फ़रमाया : “अनक़रीब यहां एक शख़्स दफ़न किया जाएगा ।” चुनान्चे इस के थोड़े ही अरसे बा’द आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत हो गई । और बाग़ियों ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के जनाज़ा मुबारका के साथ इस क़-दर उधम बाज़ी की कि आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को न रौज़ा मुनव्वर के क़रीब दफ़न किया जा सका न जन्नतुल बक़ीअ के उस हिस्से में मदफ़ून किये जा सके जो किबार सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का क़ब्रिस्तान था बल्कि सब से दूर अलग थलग “हश्शे कौकब” में आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सिपुर्दे खाक किये गए । जहां कोई सोच भी नहीं सकता था क्यूं कि उस वक़्त तक वहां कोई क़ब्र ही न थी ।

(अरियाजुन्नज़रह फ़ी मनाकिब अल अशरह, अल जुज़.3, स.41)

अल्लाह से क्या प्यार है उस्माने ग़नी का महबूबे खुदा यार है उस्माने ग़नी का

शहादत के बा’द ग़ैबी आवाज़

हज़रते सय्यिदुना अदी बिन हातिम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान

है : हज़रते अमीरुल मुअमिनीन उस्माने ग़नी रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमते भेजता है।

के दिन मैं ने अपने कानों से सुना कि कोई शख्स बुलन्द आवाज़ से केह रहा है :
 أَبَشِّرْ ابْنَ عَفَّانَ بِرُوحٍ وَرَيْحَانٍ وَبِرَبِّ غَيْرِ غَضَبَانَ أَبَشِّرْ ابْنَ عَفَّانَ بِفُقْرَانَ وَرِضْوَانَ :
 (या'नी हज़रते उस्मान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को राहत और खुशबू की खुश ख़बरी दो और नाराज़ न होने वाले रब عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात की ख़बरे फ़रहत असर दो और खुदा عَزَّوَجَلَّ के गुफ़ान व रिज़वान (या'नी बख़्शिश व रिज़ा) की भी बिशारत दो) हज़रते सय्यिदुना अदी बिन हातिम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं इस आवाज़ को सुन कर इधर उधर नज़र दौड़ाने लगा और पीछे मुड़ कर भी देखा मगर मुझे कोई शख्स नज़र नहीं आया।

(शवाहिदुन्नुबुव्वह, स.209)

अल्लाहु ग़नी हद नहीं इन्आमो अता की वोह फ़ैज़ पे दरबार है उस्माने ग़नी का

मदफ़न में फ़िरिश्तों का हुजूम

रिवायत है कि बाग़ियों की हुल्लड़ बाज़ियों के सबब तीन^३ दिन तक आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की तदफ़ीन न हो सकी, फिर चन्द जां निसार रात की तारीकी में जनाज़ा मुबारका उठा कर जन्नतुल बक़ीअ पहुंचे। अभी क़ब्र शरीफ़ खोद रहे थे कि अचानक सुवारों की एक बहुत बड़ी ता'दाद जन्नतुल बक़ीअ में दाख़िल हुई इन को देख कर येह हज़रात ख़ौफ़ज़दा हो गए। सुवारों ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : आप

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दूरद पड़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है।

हज़रात बिल्कुल न डरिये हम भी इन की तदफ़ीन में शिकत के लिये हाज़िर हुए हैं। येह आवाज़ सुन कर लोगों का ख़ौफ़ दूर हो गया और इत्मीनान के साथ हज़रते सय्यिदुना उस्मान इब्ने अफ़फ़ान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तदफ़ीन की गई। क़ब्रिस्तान से लौट कर इन सहाबियों (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ) ने क़सम खा कर लोगों से कहा कि यकीनन येह फ़िरिश्तों का ग़ुरोह था।

(शवाहिदुन्नुबुव्वह, स.209)

रुक जाएं मेरे काम हसन हो नहीं सकता फ़ैज़ान मददगार है उस्माने ग़नी का

गुस्ताख़ को दरिन्दे ने फाड़ डाला

मन्कूल है कि हाजियों का एक क़ाफ़िला मदीनतुल मुनव्वरा पहुँचा। तमाम अहले क़ाफ़िला हज़रते अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये गए लेकिन एक गुस्ताख़ तौहीन व इहानत के तौर पर ज़ियारत के लिये नहीं गया और यूँ बहाना बनाया कि मज़ार बहुत दूर है। क़ाफ़िला जब अपने वतन को वापस आ रहा था तो रास्ते में एक ख़ौफ़नाक दरिन्दा गुर्राता हुआ उस गुस्ताख़ पर हम्ला आवर हुआ और उस ने उसे चीरे फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला ! येह लरज़ा ख़ैज़ मन्ज़र देख कर तमाम अहले क़ाफ़िला ने बयक ज़बान कहा कि येह हज़रते

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुर्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

सय्यिदुना उस्मान ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की गुस्ताख़ी का अन्जाम है।

(शवाहिदुन्नुबुव्वह, स.210)

बीमार है जिस को नहीं आजारे महब्बत

अच्छा है जो बीमार है उस्माने ग़नी का

सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने म-दनी ओपरेशन फ़रमाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कितने बुलन्द पाया सहाबी हैं। यहां कोई येह न समझे कि सिर्फ़ मज़ारे पुर अन्वार के दीदार के लिये न जाने की वजह से वोह शख्स हलाक हुवा। बल्कि बात येह थी कि वोह हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का गुस्ताख़ था और आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से दिल में दुश्मनी रखने की वजह से हज़िर न हुवा था।

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और सहाबए किबार और अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की उल्फ़त व महब्बत व प्यार के हुसूल के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहिये, हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाब्दी से शिर्कत कीजिये रोज़ाना फ़िक़रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के अपने ज़िम्मादार को जम्अ करवाइये, नीज़ दुआओं की क़बूलियत और सुन्नतों की तरबियत के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरुदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रात है ।

में आशिक़ाने रसूल के हमराह हर माह कम अज़ कम तीन^३ दिन के लिये सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल कीजिये । आइये ! म-दनी काफ़िले की एक महकी महकी म-दनी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये और न सिर्फ़ तन्हा बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी म-दनी काफ़िले के लिये तैयार कीजिये चुनान्चे एक आशिक़े रसूल का बयान अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूं : हमारा म-दनी काफ़िला “नाकाखारड़ी” (बलुचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये हाज़िर हुवा था, म-दनी काफ़िले के एक मुसाफ़िर के सर में चार^४ छोटी छोटी गांठें हो गई थीं जिन के सबब उन को आधा सीसी का (या’नी आधे सर) का शदीद दर्द हुवा करता था । जब दर्द उठता तो दर्द की तरफ़ वाले चेहरे का हिस्सा सियाह पड़ जाता और तकलीफ़ के सबब इस क़-दर तड़पते कि देखा न जाता । एक रात इसी तरह वोह दर्द से तड़पने लगे हम ने गोलियां खिला कर उन को सुला दिया । सुब्ह उठे तो हश्शाश बश्शाश थे । उन्होंने ने बताया कि الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर करम हो गया, मेरे ख़्वाब में सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मअ चार यार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ करम फ़रमाया । सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी जानिब इशारा करते हुए

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ से फ़रमाया : “इस का दर्द ख़त्म कर दो।” चुनान्चे यारे ग़ार व यारे मज़ार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर ﷺ ने मेरा इस तरह म-दनी ओपरेशन किया कि मेरा सर खोल दिया और मेरे दिमाग़ में से चार⁴ काले दाने निकाले और फ़रमाया : “बेटा ! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा।” वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुके थे। सफ़र से वापसी पर उन्होंने दोबारा “चेक-अप” करवाया। डॉक्टरों ने हैरान हो कर कहा : भाई कमाल है, तुम्हारे दिमाग़ के चारों⁴ दाने ग़ाइब हो चुके हैं ! इस पर उस ने रो रो कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-क़त और ख़्वाब का तज़क़िरा किया। डॉक्टर बहुत मुतअस्सिर हुवा। उस अस्पताल के डॉक्टरों समेत वहां मौजूद 12 अफ़राद ने 12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यतें लिखवाई और बा’ज़ डॉक्टरों ने अपने चेहरे पर हाथों हाथ सरवरे का एनात ﷺ की महबूबत की निशानी या’नी दाढ़ी मुबारक सजाने की निय्यत की।

है नबी की नज़र, क़ाफ़िले वालों पर आओ सारे चलें, क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें, क़ाफ़िले में चलो लूटने रहमतें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अब्वल) स.45)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा ।

मुसाफ़हे की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, आइये मुसाफ़हे की सुन्नतें और आदाब मुला-हज़ा फ़रमाइये : दो² फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (1) “जब दो² दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसाफ़हा करते हैं और नबी (ﷺ) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों² के जुदा होने से पहले पहले दोनों² के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।” (शुअबुल ईमान लिल बैहकी, हदीस:8944, जि.6, स.471, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत) (2) “जब दो² मुस्लमानों ने मुलाकात की और एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया (या'नी मुसाफ़हा किया) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिम्माए करम पर है कि उन की दुआ को हाज़िर कर दे (या'नी क़बूल फ़रमा ले) और हाथ जुदा न होने पाएंगे कि उन की मग़िफ़रत हो जाएगी । (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि.4, स.286, हदीस:12454, दारुल फ़िक्क बैरूत) (3) जब दो² इस्लामी भाई आपस में मिलें तो पहले सलाम करें और फिर दोनों हाथ मिलाएं कि ब वक्ते मुलाकात मुसाफ़हा करना सुन्नते सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बल्कि सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहूमते भेजता है ।

है । (मिआतुल मनाजीह, जि.6, स.355) (4) फ़क़त उंगलियों के छूने का नाम मुसाफ़हा नहीं है, सुन्नत येह है कि दोनों² हाथों से मुसाफ़हा किया जाए (रहुल मुहतार, जि.9, स.669) (5) मुसाफ़हा करते वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वगैरा हाइल न हो, दोनों² हथेलियां खाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये (ऐज़न) (6) मुस्करा कर गर्म जोशी से मुसाफ़हा कीजिये । दुरूद शरीफ़ पढ़िये और हो सके तो येह दुआ भी पढ़ लीजिये : “يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ” (या’नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) (7) मुसाफ़हा के बा’द अपना ही हाथ चूम लेना मकरूह है । (तब्यीनल हक़ाइक़, जि.7, स.56) (8) वालिदैन् के हाथ पाउं भी चूम सकते हैं ।

येह रिसाला पढ़ कर दूसरों को दे दीजिये

शादी गुमी की तक़रीबात, इज्तिमआत, अअूरस और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुशतमिल पेम्प्लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये । गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने केलिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा’मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्प्लेट पहुंचा कर नेकी की दा’वत की धूमें मचाइये ।